विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
61-65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लाक के सामने, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
फोनः +91-11-28525520 / 28524457, फैक्सः +91-11-28520748
ई–मेल :dg-ccras@nic.in
वेबसाइट : www.ccras.nic.in / www.indianmedicine.nic.in

© सी.सी.आर.ए.एस. 2014
यह दस्तावेज केवल प्रचार, प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरूपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।

अर्बुद

कैंसर

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुश मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

अर्बुद क्या है ?

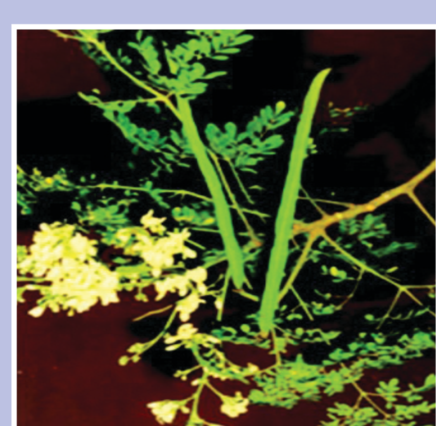

दूषित दोष (वात, पित्त एवं कफ) मांस और रक्त धातु को प्रभावित कर अर्बुद रोग (कैंसर) उत्पन्न करते हैं।

इस रोग के लक्षण क्या हैं?

- शरीर के किसी अवयव में अवांछित, अनियंत्रित वृद्धि।
- गहराई में स्थित, पूयरहित व्रण।
- वेदना रहित स्राव।
- परिवर्तित क्रियाएँ।

इसके कारण क्या हैं?

निम्नलिखित आहार विहार का निरन्तर उपयोग रोगोत्पादन के लिए उत्तरदायी है:

- अहित आहार हानिकारक प्रतिरक्षकयुक्त और कीटाणु दूषित पदार्थ का नियमित प्रयोग।
- मांस, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी आदि का सेवन।
- रासायनिक/भौतिक क्षोभक पदार्थों (सूर्यप्रकाश, विकरण) का निरन्तर सम्पर्क
- कुछ विशिष्ट औद्योगिक कार्य

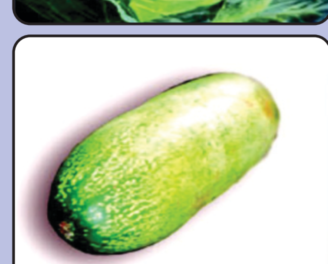

- अर्बुद जनन (कार्सिनो–जेनिक) औषधियों का अधिक सेवन।
- जल एवं वायु प्रदूषण

आयुर्वेदीय चिकित्सा

शरीर के अंगों, अर्बुद के प्रकार और अर्बुद की अवस्था के अनुसार चिकित्सा की जाती है।

- रसायन चिकित्सा : रोगक्षमता वृद्धि हेतु।
- कतिपय आयुर्वेदिक औषधियां जैसे– हरिद्रा, वरूण, शिग्रु, बिल्व, शतावरी, कण्टकारी, हरीतकी, कांचनार, बृहती, बिम्बी इत्यादि इस रोग में लाभदायक है।
- कतिपय औषध योग– अमृत भल्लातक, योगेन्द्ररस, नवरत्नराजमृगांक रस इस रोग में लाभदायक है (चिकित्सक की देख–रेख में ही यह औषधियां लें)
- स्थानिक चिकित्सा : जैसे औषधीय लेप एवं तैल इत्यादि का प्रयोग
- अग्नि (थर्मोकोटराइजेशन) और क्षारकर्म चिकित्सा
- अर्बुद का सूमल छेदन

पथ्य (क्या करें)

- ✓ शाकाहारी आहार
- ✓ फल आदि का बहुतायत से सवन
- ✓ स्वस्थ वातावरण में रहना
- ✓ मानसिक शांति बनाए रखना।

अपथ्य (क्या न करें?)

- ✗ उच्च संसाधित आहार
- ✗ कीटनाशक प्रदूषित आहार
- ✗ अतिशय मांस सेवन
- ✗ तम्बाकू एवं मद्य का अत्याधिक प्रयोग
- ✗ कुछ विशिष्ट औद्योगिक कार्य
- ✗ प्रदूषित जल एवं वायु सेवन

सी.सी.आर.ए.एस. का योगदान

- नवजीवन नामक एंटी कैंसर औषधि का विकास
- चिरायता से कैंसररोधी घटकों का पृथकीकरण
- रोहितक, भल्लातक, मधुयष्टी और ताम्रभस्म पर निदान चिकित्सात्मक अध्ययन
- कैंसर रोगियों में प्रतिरोधक क्षमता विकास हेतु क्यु० ओ० एल०–1 का विकास